स्मारिका

विश्व हिन्दी परिषद
एवं
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
के संयुक्त तत्त्वावधान में

हिन्दी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन

14 सितम्बर 2018 (शुक्रवार) अपराह्न 3.00 बजे

स्पीकर हॉल, कन्स्टीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली

(पटेल चौक मेट्रो स्टेशन गेट नं. 3 के नजदीक)

वसुधैव कुटुम्बकम्

विश्व हिन्दी परिषद

एस–1, द्वितीय तल, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, उपहार सिनेमा व्यवसायिक परिसर, नई दिल्ली–110016,
फोन: 011–41021455, 9835294766, ई-मेल : mail.hindiparishad@gmail.com,
वेबसाईट: www.vishwahindiparishad.org

vishwa hindi parishad @vishwahindi 85860 16348

विश्व हिन्दी परिषद की गतिविधियां

11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री प्रवीन कुमार जगन्नाथ जी के साथ

मॉरीशस में आयोजित 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार संबोधित करते हुए

11 अगस्त 2018 को विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव, डॉ. बिपिन कुमार को बिहार की धरती पर भव्य स्वागत करते हुए बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने किया सम्मानित (11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन, मॉरीशस के विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रतिनिधि नामित होने के उपलक्ष में)

विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव, डॉ. बिपिन कुमार हिन्दी संबर्धन हेतु मिलने के क्रम में राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोविंद जी को गुलदस्ता भेंट करते हुए

डॉ. बिपिन कुमार
महासचिव

वसुधैव कुटुम्बकम्

विश्व हिन्दी परिषद -संक्षिप्त परिचय

विश्व हिन्दी परिषद लोक मंगल और सर्वकल्याण की भावना से अनुप्रदित हिन्दी भाषा के साधकों को प्रोत्साहित कर भाषा के उन्नयन और अविरल गति से चलने के प्रयास से जुटी अपने प्रयोजन और उद्देश्य को पूरा कर रही है।

हिन्दी प्रचार–प्रसार की सेवा में तत्पर कश्मीर से कन्याकुमारी तक के साहित्यकारों, हिन्दी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं जनता को एक मंच पर एकत्रित करके एवं उन्हें अनुप्रेरित करते हुए यह संस्था विगत एक दशक से अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

इसका उद्देश्य हिन्दी को समाज सापेक्ष, व्यावहारिक, प्रकार्यात्मक, कामचलाऊ और साथ ही जीवंत हिन्दी को सिखाना है, क्योंकि मातृभाषा, अन्य भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा और अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी की विभिन्न भूमिका है। यह सभी हिन्दी प्रेमी, विद्वानों एवं चिंतकों को एकत्र करके समय–समय पर हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति उसके कर्तव्य को याद दिलाता है, और उनमें दायित्व को जागृत करता है।

विश्व हिन्दी परिषद द्वारा वर्ष में हिन्दी दिवस – 14 सितम्बर एवं विश्व हिन्दी दिवस – 10 जनवरी को मनाया जाता है।

हिन्दीं की सेवा में तत्पर हिन्दी प्रेमियों को बढ़ावा देने एवं उनके योगदान को सराहने के लिए हर वर्ष राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है।

तकनीकी विकास से समृद्ध होगी हिन्दी

प्रश्नः हिंदी में तकनीकी विकास की स्थिति पर दो तरह की चर्चाएँ दिखाई देती हैं। एक वर्ग है जो भाषा के भविष्य को लेकर अत्यधिक चिंतित है तथा एक अन्य वर्ग है जो उसे लेकर बहुत अधिक आश्वस्त दिखता है। आप क्या सोचते हैं?

उत्तरः हिंदी में तकनीकी विकास तो होना अवश्वयंभावी है और वह तकनीकी कारणों की तुलना में आर्थिक–सामाजिक–राजनैतिक परिस्थितियों से अधिक प्रेरित है। वैश्विक स्तर पर भारत का आर्थिक तथा भू–राजनैतिक दृष्टि से मजबूत होकर उभरना और उसके साथ–साथ हमारे यहाँ पर उपभोक्ता का समृद्ध, सशक्त व जागरूक होना इसका अहम कारण है। आज जो देश आर्थिक दृष्टि से मजबूत है और जहाँ पर बाजार है, वैश्विक परिदृश्य में उसका उतना ही महत्व है। विश्व बैंक के अनुसार इस वर्ष भारतीय अर्थव्यवस्था 7.3 की वार्षिक वृद्धि दर हासिल करने जा रही है जो बड़े देशों में सर्वाधिक है। भारत फ्रांस को पीछे छोड़कर इसी साल दुनिया की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। आर्थिक ठहराव से चिंतित वैश्विक कंपनियों के लिए भारत संभावनाओं का नया स्रोत बनकर उभरा है। उन्हें बाजार की तलाश है और हम बाजार उपलब्ध करा रहे हैं। ऐसे में हर क्षेी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत की ओर आकर्षित हो रही हैं और तकनीकी कंपनियाँ इसका अपवाद नहीं है।

सीधे शब्दों में कहें तो भारत के पास अब संख्याबल भी है और खर्च करने के लिए पैसा भी। पिछले वित्त वर्ष में आम भारतीय की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 8.6 प्रतिशत बढ़कर 1.13 लाख रुपए हो गई। सन 2000–2001 में यह महज 16,173 रुपएत्र क हुआ करती थी। यानी आम भारतीय की आय औसतन हर छह साल में दोगुनी हो रही है। इधर शिक्षा का स्तर भी बेहतर हुआ है तथा तकनीकी जागरूकता भी बढ़ी है। आर्थिक क्षमता बढ़ने के साथ–साथ भारतीय नागरिकों की जरूरतें भी बढ़ी हैं और महत्वाकांक्षाएँ भी। बेहतर जीवनशैली की ओर उनकी यात्रा बाजार में मांग पैदा कर रही है। यह मांग तमाम क्षेत्रों में है, जिनमें तकनीकी उत्पाद और सेवाएँ भी शामिल हैं। बाजार मांग और सप्लाई के नियम के आधार पर चलता है। मांग पैदा हो रही है तो नए उत्पाद भी आएँगे और चूँकि बाजार में ग्राहक ही राजा है इसलिए सप्लायर को ग्राहक की जरूरतों के लिहाज से ढलना पड़ेगा। इस लिहाज से मैं हिंदी में तकनीकी विकास को लेकर आश्वस्त हूँ किंतु इसका एक दूसरा पहलू भी है।

प्रश्न उठता है कि कंपनियों के स्तर पर तो ठीक है लेकिन अपने स्तर पर हम, यानी उपभोक्ता, इस स्थिति का कितना लाभ उठा रहे हैं। क्या हमारी आवश्यकताएँ मोबाइल फोन, कंप्यूटर आदि को खरीदने और संचार तथा ई–कॉमर्स जैसी सेवाओं के प्रयोग तक सीमित रहेंगी? सब कुछ बाजार के रहमोकरम पर नहीं छोड़ा जा सकता। तकनीकी कंपनियाँ अपनी ओर से उन तमाम क्षेत्रों में विकास करेंगी जो उनकी दृष्टि में आवश्यक हैं या प्रयोक्ता की बुनियादी जरूरत हैं। लेकिन इससे आगे वे तभी बढ़ेंगी जब हम उत्पादों को खरीदेंगे और इस्तेमाल करेंगे। मोबाइल और कंप्यूटर को खरीदना तो एक बुनियादी जरूरत है लेकिन हम उनका कितना और कैसे उपभोग करते हैं, आगे का तकनीकी विकास इस पर निर्भर करेगा। अगर हम अपने आपको सिर्फ कन्टेन्ट के उपभोग तक सीमित रखते हैं, अर्थात् वीडियो आदि देखना, खबरें पढ़ना और संगीत सुनना, तो उसकी बदौलत आप भविष्य में तकनीकी लिहाज से बहुत अधिक आगे जाने की उम्मीद नहीं लगा सकते। जरूरत इस बात की है कि आप इन संसाधनों का कितना उत्पादकतापूर्ण प्रयोग करते हैं। आप कितने तथा किस किस्म के सॉफ्टवेयर खरीदते हैं, अपने प्रधान कामकाज में भारतीय भाषाओं में तकनीक का किस तरह प्रयोग करते हैं, आपकी उत्पादकता में इनसे किस तरह वृद्धि होती है, शिक्षण तथा सरकारी–गैर–सरकारी सेवाओं से जुड़े तकनीकी अनुप्रयोगों में आप कितनी दिलचस्पी रखते हैं आदि आदि। मैं यहाँ पर भाषा तकनीकों के गुणवत्तापूर्ण तथा उत्पादकतापूर्ण प्रयोग की बात कर रहा हूँ। चाहे जितना तकनीकी विकास हो जाए, यदि उपभोक्ता उसे समर्थन नहीं देंगे तो भारतीय भाषाएँ उस किस्म की तकनीकी सक्षमता प्राप्त नहीं कर सकेंगी जैसी हमारी आकांक्षा है।

प्रश्नः इस दिशा में हम कितने आगे बढ़े हैं? मनोरंजन तथा संचार के प्रति भाषायी उपभोक्ता की दिलचस्पी शुरू से रही है लेकिन नए ट्रेंड क्या कहते हैं– क्या जागरूकता बढ़ने के साथ–साथ तकनीकी प्रयोग की विविधता बढ़ी है?

उत्तरः जी हाँ, वह बढ़ी अवश्य है और इसके पीछे नई पीढ़ी का सर्वाधिक योगदान है जिसके लिए तकनीक कोई हौवा नहीं है। लेकिन भारत को तकनीकी दृष्टि से बड़ी शक्ति बनाने के लिए जिस तरह का उत्साह और दीवानगी होनी चाहिए थी, वैसी कहीं नहीं दिखती। भारतीय भाषाओं में हमारा ज्यादा ध्यान कन्टेन्ट के उपभोग,

आम भारतीय की आय औसतन हर छह साल में दोगुनी हो रही है। इधर शिक्षा का स्तर भी बेहतर हुआ है तथा तकनीकी जागरूकता भी बढ़ी है। आर्थिक क्षमता बढ़ने के साथ–साथ भारतीय नागरिकों की जरूरतें भी बढ़ी हैं और महत्वाकांक्षाएँ भी....

संचार और सोशल नेटवर्किंग पर है। जैसे भारत में यू–ट्यूब पर देखे जाने वाले कुल वीडियो में से 90 प्रतिशत भारतीय भाषाओं में होते हैं। फेसबुक के उपभोक्ताओं की दृष्टि से भारत का पहला स्थान है जहाँ पर उसके 27 करोड़ प्रयोक्ता हैं। व्हाट्सऐप के बीस करोड़ सक्रिय मासिक प्रयोक्ता भारत से आते हैं। भारतीय भाषाओं के स्मार्टफोन एप्प डेली हंट के नौ करोड़ से अधिक प्रयोक्ता हैं। इस तरह के प्लेटफॉर्मों के अपने लाभ हैं, जैसे यू–ट्यूब जैसे माध्यम न सिर्फ मनोरंजन के प्रधान माध्यम बन रहे हैं बल्कि शिक्षण, कौशल विकास और जागरूकता बढ़ाने में भी उनकी भूमिका है। व्हाट्सऐप, फेसबुक, ट्विटर, शेयरचौट और डेली हंट आदि आम उपभोक्ता को निरंतर सूचनाओं से लैस करने तथा उन्हें जोड़ने में जुटे हैं। अब जरूरत है कि भारतीय भाषाओं के प्रयोक्ता तकनीक का उत्पादकता के लिए भी जमकर इस्तेमाल करें– यानी अपने दफ्तर के कामकाज में, बेहतर शिक्षा पाने के लिए, सरकारी–गैर–सरकारी सेवाओं के प्रयोग के लिए। एक और सवाल जो मुझे कचोटता है वह यह कि हिंदी का उपभोक्ता भला टेबल के दूसरी तरफ ही क्यों रहे, यानी उपभोक्ता के रूप में ही? वह खुद सप्लायर या प्रदाता क्यों न बने? वह खुद तकनीकें निर्मित क्यों न करे, खुद ई–शिक्षा प्रदान क्यों न करे, खुद सेवाओं का निर्माता क्यों न बने? संक्षेप में कहें तो टिकाऊ तकनीकी विकास और डिजिटल अर्थव्यवस्था बनाने के लिए जरूरी है कि हम भारतीय नई तकनीकों में निहित संभावनाओं का लाभ समग्रता से उठाएँ। हमारे पास मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसे प्लेटफॉर्म मौजूद हैं ही। भारत जितनी बड़ी तकनीकी शक्ति आज है, उससे कई गुना बड़ी शक्ति बन सकता है यदि हम भारतीय भाषाओं के संख्याबल को सेवा प्राप्तकर्ता से सेवा प्रदाता में तब्दील कर दें।

संख्या बल हमारी सबसे बड़ी ताकत है इसलिए तकनीकें बनती रहेंगी और हिंदी समृद्ध होती रहेगी। लेकिन खुद को महज बाजार मानकर बैठे रहना और विकास का काम दूसरों पर छोड़ देना कोई आदर्श स्थिति नहीं है। दूसरे लोगों के सहारे नैया पार नहीं होती।

संख्या बल हमारी सबसे बड़ी ताकत है इसलिए तकनीकें बनती रहेंगी और हिंदी समृद्ध होती रहेगी। लेकिन खुद को महज बाजार मानकर बैठे रहना और विकास का काम दूसरों पर छोड़ देना कोई आदर्श स्थिति नहीं है। दूसरे लोगों के सहारे नैया पार नहीं होती। वे उतना ही करेंगे जितनी कि उनकी अनिवार्यता होगी। संख्याबल का उत्सव मनाने से आगे बढ़कर हमें खुद अपनी भाषाओं में तकनीकी तरक्की का नियंत्रण संभालना होगा। एक उदाहरण देखिए– बोलने वालों की संख्या के लिहाज से दुनिया की शीर्ष बीस भाषाओं में से छह भाषाएँ भारत की हैं जिनमें हिंदी तीसरे नंबर पर है (हममें से बहुत से लोग इसे दूसरे नंबर पर मानते हैं)। लेकिन इंटरनेट पर कन्टेन्ट के लिहाज से हिंदी का स्थान 41वाँ है। मुझे याद आता है कि लगभग 15 साल पहले गूगल के तत्कालीन सीईओ एरिक श्मिट ने कहा था कि आने वाले पाँच–दस सालों में इंटरनेट पर जिन दो भाषाओं का प्रभुत्व होगा, वे हैं– मंदारिन और हिंदी। खुश होने के लिए बहुत अच्छा उद्धरण है यह लेकिन वह अवधि कब की निकल चुकी है और जहाँ इस बीच मंदारिन इंटरनेट की दसवीं सबसे बड़ी भाषा बन चुकी है, हिंदी अभी भी 41वें नंबर पर है। महत्वपूर्ण बात यह है कि हम बातों से आगे बढ़ें और वर्तमान अनुकूल परिस्थितियों का अधिकतम लाभ उठाते हुए आगे के लिए सुदृढ़ आधारशिला के निर्माण में जुटें। हमें भारतीय भाषाओं में तकनीकी उद्यमिता और टिकाऊ विकास का एक इको–सिस्टम (पारिस्थितिकीय ढाँचा) तैयार करना होगा, जिसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ–साथ भारतीय कंपनियों, छोटे स्टार्टअप्स, स्वतंत्र विकासकर्ताओं, सरकारी तकनीकी संस्थानों और अकादमिक संस्थानों की भूमिका हो। तेजी से परिणाम लाने के लिए सार्वजनिक–निजी भागीदारी (पीपीपी) एक अच्छा मार्ग सिद्ध हो सकता है।

प्रश्नः तकनीकी क्षेत्र में हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं में इस बीच क्या कुछ खास हुआ है और क्यों? क्या आपको वहाँ कोई सिनर्जी दिखाई देती है? वहाँ किस किस्म के नए अवसर पैदा हो रहे हैं?

उत्तरः यकीनन, जैसा कि मैंने पहले भी जिक्र किया, तकनीकी क्षेत्र में हिंदी का दखल मजबूती से बढ़ रहा है, भले ही उसमें निहित संभावनाएँ और भी अधिक हैं। पाँच साल पहले के दौर से तुलना करें तो आज का समय एक सपने जैसा दिखाई देता है। हाल के वर्षों में मोबाइल भाषायी तकनीकों के विकास का बड़ा उत्प्रेरक बनकर उभरा है। कारण भी स्पष्ट है– कुछ ताजा अध्ययन और सर्वेक्षण इस तरफ इशारा करते हैं कि भारत में इंटरनेट स्थित कन्टेन्ट का सर्वाधिक प्रयोग भारतीय भाषाओं में किया जा रहा है। कुछ रिपोर्टों के अनुसार सन 2020 और कुछ के अनुसार एक साल बाद, भारत में इंटरनेट सेवाओं की खपत के मामले में भारतीय भाषाओं की हिस्सेदारी 75 फीसदी के आसपास होगी। लगभग इसी अवधि में मोबाइल फोन खरीदने वाले हर दस में से नौ लोग अपनी प्रधान भाषा के रूप में भारतीय भाषाओं का प्रयोग कर रहे होंगे। इतनी बड़ी संख्या में उपभोक्ता आ रहे हैं तो उनकी तकनीकी जरूरतें भी हैं जिन्हें पूरा करना किसी भी कारोबारी संस्थान के लिए समझदारी का काम है।

रिलायंस जियो जैसी कंपनियों ने इस संकेत को समझा है और उन्होंने इसी मोबाइल उपभोक्ता के अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करने में बड़ा योगदान दिया है। हालाँकि यह उनके अपने व्यावसायिक हितों के भी अनुकूल है। किंतु इससे हुआ यह है कि बहुत बड़ी संख्या में लोगों के पास मोबाइल के जरिए ठीकठाक बैंडविड्थ के साथ किफायती दरों पर इंटरनेट सेवाओं का प्रयोग करने की क्षमता आ गई है। इसका प्रभाव कंटेंट के उपभोग और संचार आधारित ऐप्स की लोकप्रियता में दिखता है। देश में बिजली और दूरसंचार

सुविधाओं की स्थिति भी बेहतर हुई है जिससे निचले स्तर पर कंप्यूटरों के प्रयोग के लिए भी परिस्थितियाँ अनुकूल हुई हैं।

इधर माइक्रोसॉफ्ट और गूगल जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भी बढ़ती हुई मांग और जन–आकांक्षाओं के मद्देनजर भाषायी तकनीकी विकास पर ध्यान केंद्रित किया है। लगभग हर दूसरे महीने माइक्रोसॉफ्ट या गूगल की ओर से कोई न कोई नया भाषायी अनुप्रयोग, फीचर या सेवा जारी की जा रही है। भारत सरकार ने भी राष्ट्रव्यापी फाइबर ऑप्टिक नेटवर्क की स्थापना, मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से अनुकूल संदेश दिया है। डिजिटल इंडिया के नौ में से तीन स्तंभों में भाषायी तकनीकी विकास की प्रासंगिकता है। इसका परिणाम यह हुआ है कि अब पर्सनल कंप्यूटर पर लगभग वह सब कुछ करना संभव है जो अंग्रेजी या दूसरी यूरोपीय भाषाओं में किया जा सकता है। बात टेक्स्ट इनपुट, फॉन्टों और यूनिकोड समर्थन से बहुत आगे जा निकली है। अब आप विभिन्न आकार के उपकरणों में (डेस्कटॉप, लैपटॉप, टैबलेट, मोबाइल) तथा ऑनलाइन–ऑफलाइन भारतीय भाषाओं का उत्पादकतापूर्ण प्रयोग कर सकते हैं। स्पेलिंग चेक से लेकर ऑटो करेक्ट, हिंदी थिसॉरस से लेकर पूरे के पूरे ऑपरेटिंग सिस्टम तथा ऑफिस सुइट के यूजर इंटरफेस (मुखावरण, संदेशों, मेनू आदि) को हिंदी या दूसरी भाषाओं में परिवर्तित किया जा सकता है। ऑनलाइन अनुवाद से लेकर वॉयस टाइपिंग जैसी सुविधाएं भी आ गई हैं जिन्हें निरंतर परिमार्जित किया जा रहा है। माइक्रोसॉफ्ट ने दृष्टिहीनों के लिए प्रयुक्त होने वाले नैरेटर नामक सॉफ्टवेयर में भी हिंदी का समर्थन दे दिया है और 15 भारतीय भाषाओं में ईमेल पतों के इस्तेमाल की सुविधा भी अपने इको–सिस्टम में दी है। उधर गूगल ने द्विभाषीय वेब सर्च, भारतीय भाषाओं में ऐड–सेन्स जैसी सुविधाएँ शुरू की हैं। फेसबुक, ट्विटर आदि ने अपना स्थानीयकरण किया है तो बहुत सारे ई–कॉमर्स पोर्टल भी भारतीय भाषाओं को अपना रहे हैं। वास्तव में अगर सूची गिनाई जाए तो भाषायी तकनीकी सुविधाओं के सिर्फ नामों से ही एक पूरा लेख बन जाएगा।

बात सिर्फ बहुराष्ट्रीय कंपनियों तक सीमित नहीं है। बहुत सी भारतीय कंपनियाँ भी भाषायी तकनीकी विकास में योगदान दे रही हैं। इनमें रेवरी, प्रोसेस 9, इंडस ओएस, शेयर चौट, क्विलपैड, शब्दकोश, पाणिनि कीबोर्ड आदि के नाम लिए जा सकते हैं। इंटरनेट सामग्री के क्षेत्र में भी अधिकांश प्रधान अखबार, पोर्टल आदि भारतीय भाषाओं में सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं। माइक्रोसॉफ्ट ने हाल ही में अपने लोकप्रिय एमएसएन नामक पोर्टल को हिंदी में प्रस्तुत किया है, गूगल समाचार और बिंग (माइक्रोसॉफ्ट) समाचार तो पहले से ही हिंदी तथा अनेक दूसरी भाषाओं में उपलब्ध हैं ही। यू–ट्यूब पर भी भाषायी कन्टेन्ट निर्माण ने गति पकड़ी है।

प्रश्नः भविष्य में भाषायी तकनीकों की क्या दिशा रहेगी?

उत्तरः भाषायी तकनीकी विकास की अगली सीढ़ी है– कृत्रिम मेधा या आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस। किसी समय पर जो काम बहुत मुश्किल हुआ करते थे, मसलन बड़ी मात्रा में डेटा इकट्ठा करना और उसका विश्लेषण, वे नई परिस्थितियों में अपेक्षाकृत काफी आसान हो गए हैं। नई परिस्थितियों से मेरा आशय– क्लाउड कंप्यूटिंग की बढ़ती लोकप्रियता, बिग डेटा जैसी अवधारणों का घटित होना जिनमें हमारी कल्पनाओं से भी अधिक सूचनाएँ एकत्र तथा प्रोसेस की जा रही हैं और कंप्यूटरों का ज्यादा से ज्यादा मेधावी या इंटेलीजेंट होते चले जाना है। एक ओर जहाँ हम तकनीकों को सीख रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ तकनीकें हमें सीख रही हैं। वे हमारे आचरण,कामकाज, पसंद–नापसंद, सूचनाओं के निर्माण व प्रयोग, संचार आदि से सीखकर नई क्षमताएँ उत्पन्न कर रही हैं जिनका इस्तेमाल हमारी मदद के लिए किया जा सके। हालाँकि आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को लेकर कुछ शंकाएँ और आशंकाएँ भी हैं जिनका समाधान सरकारों तथा कंपनियों को मिलकर करना है। किंतु इतना स्पष्ट है कि वह हमारे जीवन में रूपांतरकारी परिवर्तन लाने जा रही हैं। आने वाले वर्षों में मेधावी तकनीक लगभग उसी तरह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन जाएंगी जैसे कि हमारे घरों में बिजली या पानी है। वे हमारी भाषाओं को भी लाभान्वित करने वाली हैं। भाषाओं के बीच दूरियाँ अप्रासंगिक हो जाने वाली हैं क्योंकि तकनीक भाषाओं के बीच एक अदृश्य दुभाषिये का रूप ले लेगी। आप अपनी भाषाओं का प्रयोग करते हुए ही विश्व की अन्य भाषाओं के साथ संपर्क कर सकेंगे और उनकी सामग्री का उपभोग कर सकेंगे, फिर भले ही वह शिक्षा के क्षेत्र में हो, व्यवसाय के क्षेत्र में या हमारे दैनिक जीवन में। इससे भाषाएँ मजबूत होंगी और उनका भविष्य सुनिश्चित होगा। तब हम अपनी ऊर्जा अपनी भाषाओं में सीखने और आगे बढ़ने पर केंद्रित कर सकेंगे।

उससे पहले एक जरूरी बात यह है कि देश में तकनीकी जागरूकता का बड़े पैमाने पर प्रसार किया जाए। विश्व हिंदी सम्मेलन जैसे आयोजन इस दिशा में अहम भूमिका निभा सकते हैं। लोगों को आज भी उन अनुप्रयोगों की जानकारी नहीं है जो पहले से मौजूद हैं और उनकी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं, जैसे कि इनपुट माध्यम (टाइपिंग, फॉन्ट आदि)। हम जागरूक होंगे तभी इन सीमाओं से आगे बढ़कर तकनीक का पूरा लाभ उठा सकेंगे। जरूरत है कि हम न सिर्फ सामान्य उत्पादकता सॉफ्टवेयरों, इंटरनेट, मोबाइल सेवाओं तथा क्लाउड सेवाओं के प्रयोग में निष्णात हों बल्कि उनसे आगे की भी सोचें। हमें भारत को सिर्फ बीपीओ और आउटसोर्सिंग के जरिए तकनीकी विश्व शक्ति नहीं बनाना है बल्कि उसे एक ज्ञान समाज में तब्दील करना है। तकनीक भारत में सामाजिक परिवर्तनों तथा आर्थिक विकास का निरंतर चलने वाला जरिया बन सकती है, और भाषाओं की इसमें बड़ी भूमिका होने वाली है।

बालेन्दु शर्मा दाधीच– भारतीय भाषाओं के तकनीकी विकास में निरंतर योगदान के लिए चर्चित तकनीकविद् तथा पूर्व संपादक हैं। भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित श्री दाधीच वर्तमान में माइक्रोसॉफ्ट में निदेशक– स्थानीयकरण के पद पर कार्यरत हैं।

हिन्दी ऊँचाई की ओर अग्रसर

"तमसो मा ज्योतिर्मय" अर्थात मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। सदियों से यह प्रेरणादायक वाक्य भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। प्रकाश में सब कुछ दिखाई देता है लेकिन अंधकार में कुछ भी नहीं। इसी तरह हिन्दी भारत की संपर्क भाषा के रूप में हमारी सांस्कृतिक परंपरा और चेतना की सूत्रधार है। तुलसीदास, कबीर, कंबर, सूरदास, मीरा, नरसी मेहता, विद्यापति, रंसख़ान, गालिब व रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि संत कवियों ने अपनी–अपनी मातृभाषाओं में रचित रचनाओं के माध्यम से संपूर्ण देश को एक सूत्र में बांधकर भारतीय इतिहास और संस्कृति को प्रकाशमान बनाया हें।

पिछले दिनों 2011 की जनगणना के आधार पर भारत में हिन्दी मातृभाषियों की संख्या 41.33 प्रतिशत से बढ़कर 43.6 प्रतिशत हो गई है। तमिलनाडु व केरल जैसे दक्षिण भारतीय राज्यों में हिंदी भाशा बोलने वालों की संख्या अनुपात से ज्यादा बड़ी है। कर्नाटक, आँध्र भी हिंदी में पीछे नहीं रहे। मामूली बढ़त के साथ बंगला भाषी दूसरे स्थान पर, मराठी तीसरे और उर्दू भाषी सातवें नंबर पर हैं। संस्कृत बोलने वालों की संख्या मात्र 24829 है। हिन्दी भारत की एक संपर्क भाषा के साथ पूरे देश को जोड़ने की मजबूत कड़ी है। हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है तथा देवनागरी को राष्ट्रीय लिपी के रूप में मान्यता प्राप्त है। एक भारतीय होकर एक समन्वित संस्कृति के विकास के लिए सभी का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे हिंदी को अपनी भाषा समझ कर अपनाएं और राष्ट्रभाषा का मार्ग प्रशस्त करें।

सादर,

एन. के. अग्रवाल – बंगलुरु
(अंतराष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ डाक टिकट विश्लेषक एवम संग्रहकर्ता

विश्व हिन्दी दिवस 2017 की झलकियाँ

विश्व हिन्दी दिवस 2017 की झलकियाँ

हिन्दी दिवस 2017 की झलकियाँ

विश्व हिन्दी दिवस 2018 की झलकियाँ

विश्व हिन्दी परिषद के पिछले कार्यक्रम के मंचासीन अतिथिगण

विश्व हिन्दी दिवस
-2018

हिन्दी दिवस
-2017

विश्व हिन्दी दिवस
-2017

हिन्दी दिवस
-2016

विश्व हिन्दी दिवस
-2015

विश्व हिन्दी परिषद द्वारा पिछले कार्यक्रमों में सम्मानार्थ व्यक्तित्व